THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.09

ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक संबंधों का विघटन और पुनर्संरचना: एक अध्ययन

प्रीतिका
शोधार्थी, जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

ममता कालिया हिंदी कथा साहित्य की प्रमुख लेखिका हैं, जिन्होंने मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री-अस्मिता, पारिवारिक संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक संबंधों के विघटन और पुनर्संरचना की प्रक्रिया का विश्लेषण करना है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में आधुनिकता, शहरीकरण, आर्थिक स्वतंत्रता, बदलती लैंगिक भूमिकाओं तथा व्यक्तिवादी जीवन-दृष्टि के कारण पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों में आए परिवर्तन को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न तनाव, संवादहीनता, पीढ़ीगत संघर्ष तथा दांपत्य असंतुलन विघटन के प्रमुख कारण हैं। साथ ही, लेखिका संबंधों के पूर्ण विघटन के स्थान पर नए मूल्यों, आपसी समझ, सह-अस्तित्व और समानता पर आधारित संबंधों की पुनर्संरचना की संभावनाओं को भी रेखांकित करती हैं। इस प्रकार ममता कालिया का कथा साहित्य समकालीन भारतीय परिवार की बदलती संरचना और सामाजिक यथार्थ का महत्वपूर्ण दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द— *ममता कालिया, कथा साहित्य, पारिवारिक संबंध, विघटन, पुनर्संरचना, मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री-अस्मिता, सामाजिक परिवर्तन, दांपत्य संबंध, समकालीन हिंदी साहित्य।*

1. प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में परिवार सदैव एक केंद्रीय सामाजिक संस्था के रूप में उपस्थित रहा है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना में परिवार केवल जैविक या आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों तथा भावनात्मक संबंधों का प्रमुख आधार माना जाता है। समय के साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने पारिवारिक संरचना एवं संबंधों के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है। विशेषतः उत्तर-आधुनिक और वैश्वीकरण के दौर में पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उभरकर आई हैं, जिनके परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों में विघटन, तनाव, संवादहीनता तथा मूल्य-संकट जैसी स्थितियाँ देखने को मिलती हैं (Giddens, 1992)। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में इन परिवर्तनों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करने वाली लेखिकाओं में ममता कालिया का विशेष स्थान है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों और कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री-अनुभव, दांपत्य संबंध, पारिवारिक संघर्ष तथा बदलती सामाजिक संरचनाओं का यथार्थपरक चित्रण किया है। उनकी रचनाएँ पारिवारिक संबंधों के भीतर उत्पन्न होने वाले तनावों, असंतोषों और संघर्षों को केवल उजागर ही नहीं करतीं, बल्कि उन संभावनाओं

को भी रेखांकित करती हैं जिनके माध्यम से संबंधों का पुनर्निर्माण और पुनर्संरचना संभव हो सकती है (शर्मा, 2018)। इस दृष्टि से ममता कालिया का कथा साहित्य समकालीन भारतीय परिवार की बदलती मानसिकता और सामाजिक यथार्थ को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

समकालीन हिंदी साहित्य में ममता कालिया का नाम एक सशक्त कथाकार, उपन्यासकार, कवयित्री तथा नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित है। उनका जन्म 2 नवम्बर 1940 को उत्तर प्रदेश के वृंदावन में हुआ। उनके पिता विद्याभूषण अग्रवाल हिंदी तथा अंग्रेजी साहित्य के विद्वान अध्यापक थे, जिनका साहित्यिक वातावरण ममता कालिया के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण रहा। प्रारंभिक शिक्षा विभिन्न नगरों में प्राप्त करने के बाद उन्होंने उच्च शिक्षा अंग्रेजी साहित्य में ग्रहण की। साहित्यिक परिवेश और व्यापक सामाजिक अनुभवों ने उनके चिंतन को गहराई प्रदान की, जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है (शर्मा, 2018)। ममता कालिया का जीवन भारतीय मध्यवर्गीय समाज की जटिलताओं और बदलती सामाजिक परिस्थितियों से गहरे रूप में जुड़ा रहा है। उन्होंने शिक्षण तथा साहित्य-सृजन दोनों क्षेत्रों में सक्रिय योगदान दिया। उनके वैचारिक और साहित्यिक विकास में स्त्री जीवन के विविध अनुभवों, सामाजिक विषमताओं तथा पारिवारिक संरचना के बदलते स्वरूप ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में जीवन की वास्तविक समस्याएँ अत्यंत स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त होती हैं (सिंह, 2016)।

ममता कालिया का साहित्यिक अवदान विविध विधाओं में फैला हुआ है, किंतु उनके उपन्यास और कहानी-संग्रह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों में *बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, एक पत्नी के नोट्स, दौड़* तथा *अंधेरे का ताला* प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों, स्त्री-जीवन, दांपत्य संघर्ष, सामाजिक विषमताओं तथा बदलते मध्यवर्गीय मूल्यों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है (कालिया, 2002)।

कहानी साहित्य के क्षेत्र में भी ममता कालिया ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके प्रमुख कहानी-संग्रहों में *छुटकारा, सीट नं. छह, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, मुखौटा* तथा *प्रतिदिन* उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध, पारिवारिक तनाव, सामाजिक विसंगतियाँ तथा आधुनिक जीवन की विडंबनाएँ प्रमुख विषय के रूप में उभरती हैं। उनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पक्षों को अत्यंत संवेदनशीलता और व्यंग्यात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं (वर्मा, 2019)।

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में ममता कालिया का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे उन लेखिकाओं में अग्रणी हैं जिन्होंने स्त्री-विमर्श को केवल वैचारिक स्तर पर नहीं, बल्कि जीवन के व्यावहारिक और सामाजिक संदर्भों में प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ स्त्री-मुक्ति के अतिवादी आग्रहों के बजाय स्त्री के दैनिक संघर्षों, सामाजिक असमानताओं और आत्मसम्मान की खोज को केंद्र में रखती हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य भारतीय समाज की वास्तविकताओं से गहरे स्तर पर जुड़ा हुआ है (राजेंद्र यादव, 2008)। नई कहानी आंदोलन के बाद विकसित हिंदी कथा साहित्य में ममता कालिया ने एक विशिष्ट पहचान निर्मित की। उन्होंने मध्यवर्गीय परिवारों की समस्याओं, बदलते सामाजिक मूल्यों और स्त्री-अनुभवों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ न केवल स्त्री-जीवन का दस्तावेज हैं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज की जटिल संरचना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम भी हैं। हिंदी कथा साहित्य में उनका योगदान सामाजिक यथार्थ, स्त्री चेतना और पारिवारिक संबंधों के नवीन विश्लेषण के लिए विशेष रूप से स्मरणीय है (शर्मा, 2018)।

ममता कालिया की रचनात्मक दृष्टि मूलतः यथार्थवादी, मानवीय और सामाजिक सरोकारों से संपृक्त है। वे साहित्य को समाज और व्यक्ति के अंतर्संबंधों को समझने का माध्यम मानती हैं। उनकी रचनाओं में व्यक्ति और समाज के बीच उत्पन्न तनाव, पारिवारिक संबंधों की जटिलताएँ, स्त्री की आत्मपहचान तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का गहन विश्लेषण मिलता है। वे जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों में निहित बड़े सामाजिक सत्य को उजागर करने की क्षमता रखती हैं (कुमार, 2015)। उनकी रचनात्मक दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष स्त्री चेतना है। वे स्त्री को केवल पीड़ित पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे संघर्षशील, आत्मनिर्भर और निर्णयक्षम व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करती हैं। उनके साहित्य में स्त्री अपने अस्तित्व, सम्मान और स्वतंत्रता के लिए

निरंतर प्रयासरत दिखाई देती है। साथ ही, वे परिवार और समाज की संस्था को पूरी तरह अस्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उनमें व्याप्त असमानताओं और अंतर्विरोधों को उजागर करते हुए अधिक मानवीय एवं समानतामूलक संबंधों की स्थापना का समर्थन करती हैं (Beauvoir, 1949/2011)।

2. पारिवारिक संबंधों की अवधारणा और भारतीय समाज

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन, सार्वभौमिक और मूलभूत सामाजिक संस्था है। यह केवल रक्त-संबंधों अथवा वैवाहिक संबंधों पर आधारित समूह नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा भावनात्मक संबंधों का एक संगठित तंत्र भी है। परिवार व्यक्ति के समाजीकरण की प्रथम इकाई के रूप में कार्य करता है, जहाँ वह सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, व्यवहारों और सांस्कृतिक परंपराओं को ग्रहण करता है। समाजशास्त्रियों के अनुसार परिवार वह संस्था है जिसके माध्यम से समाज अपनी सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखता है तथा नई पीढ़ी को सामाजिक जीवन के लिए तैयार करता है (Murdock, 1949)। भारतीय संदर्भ में परिवार का महत्व और भी व्यापक है। यहाँ परिवार केवल जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों, सामाजिक उत्तरदायित्वों तथा पारस्परिक सहयोग का केंद्र माना जाता है। भारतीय संस्कृति में परिवार को जीवन का आधार माना गया है, जहाँ व्यक्ति का विकास सामूहिकता, सह-अस्तित्व और परस्पर उत्तरदायित्व की भावना के साथ होता है (कापड़िया, 1966)। इस प्रकार परिवार व्यक्ति और समाज के बीच सेतु का कार्य करता है तथा सामाजिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता सुनिश्चित करता है।

2.1 भारतीय परिवार व्यवस्था का स्वरूप

भारतीय परिवार व्यवस्था अपनी विशिष्ट संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों और सामूहिक जीवन-दृष्टि के कारण विश्व की अन्य पारिवारिक व्यवस्थाओं से भिन्न मानी जाती है। पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था प्रमुख रही है, जिसमें अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती थीं तथा आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दायित्वों का निर्वहन सामूहिक रूप से किया जाता था। परिवार के वरिष्ठ सदस्य निर्णय लेने में प्रमुख भूमिका निभाते थे तथा अनुशासन, सम्मान और पारस्परिक सहयोग को विशेष महत्व दिया जाता था (Karve, 1961)।

भारतीय परिवार व्यवस्था का आधार त्याग, समर्पण, कर्तव्यबोध और पारिवारिक एकता रहा है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को सामूहिक हित के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी जाती थी। विवाह को केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का संबंध माना जाता था। परिणामस्वरूप परिवार सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और भावनात्मक संरक्षण का प्रमुख माध्यम बनता था। यद्यपि समय के साथ इस व्यवस्था में अनेक परिवर्तन आए हैं, फिर भी भारतीय परिवार की सांस्कृतिक जड़ें आज भी सामूहिकता और संबंधों की महत्ता पर आधारित हैं (Desai, 1964)।

2.2 संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण

आधुनिक काल में भारतीय समाज में पारिवारिक संरचना के स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा रोजगार के नए अवसरों ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को प्रभावित किया है। रोजगार और शिक्षा के कारण व्यक्तियों का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर प्रवास बढ़ा, जिससे छोटे और स्वतंत्र परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे-धीरे एकल परिवारों ने लेना प्रारंभ कर दिया (Ahuja, 2016)। एकल परिवार व्यवस्था ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निर्णय लेने की स्वायत्तता और आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया है। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक भूमिकाओं के पुनर्गठन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालांकि, इस परिवर्तन के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे वृद्धजनों की उपेक्षा, पारिवारिक सहयोग में कमी, बच्चों के समाजीकरण की समस्याएँ तथा भावनात्मक अकेलेपन की वृद्धि। इस प्रकार संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण भारतीय समाज में व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का द्योतक है (Shah, 1998)। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के बाद वैश्वीकरण ने भारतीय समाज और परिवार दोनों को गहराई से प्रभावित किया है। आर्थिक उदारीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी के विकास, उपभोक्तावादी संस्कृति तथा वैश्विक संचार माध्यमों के विस्तार ने जीवनशैली

और सामाजिक संबंधों के स्वरूप को परिवर्तित किया है। वैश्वीकरण ने व्यक्तिवाद, प्रतिस्पर्धा और आत्मकेंद्रित जीवन-दृष्टि को बढ़ावा दिया, जिसके कारण पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों और सामूहिकता की भावना पर प्रभाव पड़ा (Giddens, 1999)। वैश्वीकरण के प्रभाव से परिवार के भीतर भूमिकाओं और संबंधों में भी परिवर्तन आया है। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा और व्यावसायिक अवसरों में वृद्धि ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती दी है। साथ ही, डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया ने पारिवारिक संवाद के स्वरूप को भी परिवर्तित किया है। एक ओर वैश्वीकरण ने परिवार के सदस्यों को नए अवसर और स्वतंत्रता प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर संबंधों में दूरी, समयाभाव और भावनात्मक विखंडन जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया है (Bauman, 2003)। इसलिए वैश्वीकरण को पारिवारिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक माना जा सकता है।

2.3 आधुनिकता एवं पारिवारिक मूल्यों का संकट

आधुनिकता ने भारतीय समाज में तर्कशीलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता के विचारों को प्रोत्साहित किया है। इन परिवर्तनों ने पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं के साथ-साथ पारिवारिक मूल्यों को भी प्रभावित किया है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति की आकांक्षाएँ, महत्वाकांक्षाएँ और व्यक्तिगत उपलब्धियाँ अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं, जिसके कारण सामूहिकता और पारिवारिक प्रतिबद्धताओं का महत्व अपेक्षाकृत कम हुआ है (Beck & Beck-Gernsheim, 2002)। आधुनिकता के प्रभाव से परिवार के भीतर अधिकार, कर्तव्य और संबंधों की पारंपरिक अवधारणाएँ पुनर्परिभाषित हुई हैं। दांपत्य संबंधों में समानता और स्वतंत्रता की अपेक्षाएँ बढ़ी हैं, जबकि पीढ़ियों के बीच मूल्यों और दृष्टिकोणों का अंतर भी अधिक स्पष्ट हुआ है। परिणामस्वरूप अनेक परिवारों में संवादहीनता, वैचारिक संघर्ष, संबंधों में अस्थिरता तथा भावनात्मक दूरी जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। यह स्थिति पारिवारिक मूल्यों के संकट को इंगित करती है, जहाँ पारंपरिक मूल्य कमजोर हो रहे हैं, किंतु नए मूल्यों की स्थिर संरचना अभी पूरी तरह विकसित नहीं हो पाई है (Giddens, 1992)। समकालीन हिंदी कथा साहित्य, विशेष रूप से ममता कालिया के कथा साहित्य में, इसी संक्रमणशील सामाजिक स्थिति का सजीव चित्रण मिलता है। उनके पात्र पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों और आधुनिक जीवन-दृष्टि के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से उनके साहित्य का अध्ययन भारतीय परिवार व्यवस्था में हो रहे परिवर्तनों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक संबंधों का विघटन

ममता कालिया के कथा साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न विघटन, तनाव और बदलती मानवीय संवेदनाओं का यथार्थपरक चित्रण है। उनकी रचनाएँ भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों की उन परिस्थितियों को सामने लाती हैं, जहाँ पारंपरिक पारिवारिक मूल्य आधुनिक जीवन की चुनौतियों से टकराते हुए दिखाई देते हैं। ममता कालिया परिवार को केवल सामाजिक संस्था के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि उसे व्यक्ति की भावनात्मक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से जुड़ी एक जीवंत संरचना के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनके कथा-साहित्य में पारिवारिक संबंधों के भीतर छिपे तनाव, असंतोष, संघर्ष और विघटन के विविध रूप स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं (शर्मा, 2018)।

ममता कालिया के उपन्यासों और कहानियों में दांपत्य संबंधों का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके साहित्य में पति-पत्नी संबंध पारंपरिक आदर्शवाद से मुक्त होकर यथार्थवादी धरातल पर उपस्थित होते हैं। दांपत्य जीवन में उत्पन्न तनाव का प्रमुख कारण बदलती सामाजिक परिस्थितियाँ, आर्थिक दबाव, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ तथा पारस्परिक अपेक्षाओं का असंतुलन है। *एक पत्नी के नोट्स* और *नरक दर नरक* जैसे उपन्यासों में पति-पत्नी के बीच संवाद की कमी, अहंभाव तथा एक-दूसरे को समझने में असफलता संबंधों को जटिल बनाती है। लेखिका यह संकेत करती हैं कि आधुनिक जीवन की व्यस्तता और प्रतिस्पर्धा ने दांपत्य संबंधों की आत्मीयता को प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप संबंधों में तनाव और दूरी बढ़ती है (कालिया, 2002)।

पति-पत्नी संबंधों के बदलते स्वरूप को ममता कालिया ने अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। पारंपरिक भारतीय समाज में पति को परिवार का निर्णायक और स्त्री को आज्ञाकारी भूमिका में देखा जाता था, किंतु आधुनिक शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने इस व्यवस्था को चुनौती दी है। ममता कालिया की स्त्री पात्र अपनी स्वतंत्र पहचान और सम्मान की आकांक्षा रखती हैं। वे केवल परिवार के लिए समर्पित भूमिका तक सीमित नहीं रहना चाहतीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व और अधिकारों को भी महत्व देती हैं। यही परिवर्तन कई बार पति-पत्नी के बीच वैचारिक संघर्ष का कारण बनता है। लेखिका इन संघर्षों को किसी एक पक्ष की विजय या पराजय के रूप में नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक मूल्यों की स्वाभाविक परिणति के रूप में प्रस्तुत करती हैं (गुप्ता, 2017)।

ममता कालिया के कथा साहित्य में आर्थिक दबाव भी पारिवारिक विघटन का एक महत्वपूर्ण कारण बनकर उभरता है। शहरी मध्यवर्गीय जीवन में आर्थिक असुरक्षा, बढ़ती उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ तथा सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की आकांक्षा परिवार के भीतर तनाव को जन्म देती हैं। *दौड़* जैसे उपन्यास में आर्थिक सफलता की अंधी प्रतिस्पर्धा पारिवारिक संबंधों को प्रभावित करती है और व्यक्ति भावनात्मक संबंधों की अपेक्षा भौतिक उपलब्धियों को अधिक महत्व देने लगता है। परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों के बीच आत्मीयता कम होती जाती है और संबंध औपचारिकता की ओर अग्रसर होने लगते हैं (वर्मा, 2019)। उनकी रचनाओं में पीढ़ीगत संघर्ष भी पारिवारिक विघटन का एक प्रमुख आयाम है। नई पीढ़ी आधुनिक जीवन-मूल्यों, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत निर्णयों को महत्व देती है, जबकि पुरानी पीढ़ी पारंपरिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण की पक्षधर दिखाई देती है। इस वैचारिक अंतर के कारण परिवार के भीतर अनेक प्रकार के तनाव उत्पन्न होते हैं। ममता कालिया इन संघर्षों को केवल विरोध की दृष्टि से नहीं देखतीं, बल्कि उन्हें सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानती हैं। उनके पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पीढ़ियों के बीच संवाद की कमी अनेक समस्याओं को जन्म देती है और संबंधों में दूरी बढ़ाती है (सिंह, 2016)।

संवादहीनता और भावनात्मक दूरी ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से हैं। आधुनिक जीवन की व्यस्तता, पेशेगत दबाव तथा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं ने परिवार के सदस्यों के बीच प्रत्यक्ष संवाद को सीमित कर दिया है। परिणामस्वरूप व्यक्ति एक ही परिवार में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से अकेला अनुभव करता है। लेखिका ने अनेक कहानियों में यह दिखाया है कि संबंधों का वास्तविक संकट बाहरी परिस्थितियों से अधिक संवाद के अभाव से उत्पन्न होता है। जब परिवार के सदस्य एक-दूसरे की भावनाओं, आवश्यकताओं और समस्याओं को समझने में असफल रहते हैं, तब संबंधों में अविश्वास और दूरी बढ़ने लगती है (Giddens, 1992)।

ममता कालिया के साहित्य में स्त्री की आत्मनिर्भरता और आत्मचेतना भी पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षित और कार्यरत स्त्री अब केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहना चाहती। वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के साथ-साथ निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक सम्मान की भी अपेक्षा करती है। यद्यपि यह परिवर्तन स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण है, फिर भी पितृसत्तात्मक मानसिकता वाले परिवारों में यह अनेक बार तनाव का कारण बनता है। लेखिका की स्त्री पात्र अपने अधिकारों और अस्मिता के प्रति सजग हैं, जिसके कारण वे अन्यायपूर्ण परिस्थितियों का विरोध करती हैं। यह विरोध पारिवारिक संबंधों में टकराव उत्पन्न करता है, किंतु साथ ही संबंधों को अधिक समानतामूलक बनाने की दिशा भी प्रदान करता है (Beauvoir, 1949/2011)।

4. चयनित कृतियों का विश्लेषण

ममता कालिया के कथा साहित्य में परिवार केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक मूल्यों, लैंगिक संबंधों, आर्थिक दबावों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं का जीवंत मंच है। उनकी रचनाएँ भारतीय मध्यवर्गीय परिवार के संक्रमणकालीन स्वरूप को अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न तनाव, विघटन और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया उनके उपन्यासों और कहानियों में बार-बार उभरती है। विशेष रूप से *बेघर*, *नरक दर नरक*, *दौड़* तथा *एक पत्नी के नोट्स* जैसी कृतियाँ इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

4.1 *बेघर* में पारिवारिक संबंध

बेघर ममता कालिया का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें आधुनिक जीवन की विसंगतियों और पारिवारिक संबंधों की अस्थिरता का मार्मिक चित्रण मिलता है। उपन्यास का केंद्रीय कथ्य केवल भौतिक घर की तलाश नहीं है, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा और संबंधों में स्थायित्व की खोज भी है। इसमें पात्रों के जीवन में पारिवारिक संबंधों की जटिलता और असुरक्षा बार-बार उभरकर सामने आती है। परिवार के भीतर विश्वास, आत्मीयता और सामंजस्य का अभाव व्यक्तियों को मानसिक रूप से अकेला बना देता है। लेखिका यह दर्शाती हैं कि आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ पारिवारिक संबंधों को कमजोर करती हैं तथा व्यक्ति को अपने ही परिवार में परायापन अनुभव होने लगता है (कालिया, 1971/2010)। उपन्यास में संबंधों के विघटन के साथ-साथ पुनर्संरचना की संभावनाएँ भी दिखाई देती हैं। पात्र अपने अनुभवों और संघर्षों के माध्यम से यह समझने का प्रयास करते हैं कि संबंध केवल सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि पारस्परिक समझ और भावनात्मक सहयोग पर आधारित होते हैं। इस प्रकार *बेघर* आधुनिक परिवार की विडंबनाओं और संबंधों की नई संभावनाओं दोनों को अभिव्यक्त करता है।

4.2 *नरक दर नरक* में दांपत्य जीवन

नरक दर नरक दांपत्य जीवन की जटिलताओं और मध्यवर्गीय संघर्षों का सशक्त दस्तावेज है। इस उपन्यास में पति-पत्नी संबंधों को आदर्शवादी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि यथार्थवादी संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। आर्थिक अभाव, सामाजिक अपेक्षाएँ, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ और मानसिक तनाव दांपत्य संबंधों को प्रभावित करते हैं। पति-पत्नी के बीच उत्पन्न असहमति और संवादहीनता धीरे-धीरे संबंधों को तनावपूर्ण बना देती है। लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि विवाह केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि निरंतर संवाद और सहयोग की प्रक्रिया है (शर्मा, 2018)। उपन्यास में स्त्री पात्र अपने अस्तित्व और सम्मान के प्रति सजग दिखाई देती है। वह पारंपरिक भूमिकाओं के भीतर सीमित रहने के बजाय अपनी स्वतंत्र पहचान की खोज करती है। यही चेतना दांपत्य संबंधों में नए प्रकार के प्रश्न खड़े करती है। ममता कालिया इस संघर्ष को स्त्री और पुरुष के बीच विरोध के रूप में नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। परिणामस्वरूप उपन्यास दांपत्य संबंधों के विघटन के साथ-साथ उनके पुनर्संतुलन की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

4.3 *दौड़* में आधुनिक परिवार का संकट

दौड़ समकालीन उपभोक्तावादी समाज और आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धात्मक संस्कृति का प्रतिनिधि उपन्यास है। इसमें परिवार के सदस्यों के बीच बढ़ती दूरी, भौतिक सफलता की अंधी दौड़ तथा मानवीय मूल्यों के क्षरण को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। उपन्यास का शीर्षक ही आधुनिक जीवन की उस निरंतर दौड़ का प्रतीक है जिसमें व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिए अपने संबंधों और भावनात्मक आवश्यकताओं की उपेक्षा करने लगता है। उपन्यास में परिवार आर्थिक रूप से सम्पन्न दिखाई देता है, किंतु भावनात्मक स्तर पर विखंडित है। पारिवारिक संबंधों की जगह व्यक्तिगत उपलब्धियों और सामाजिक प्रतिष्ठा को अधिक महत्व दिया जाता है। माता-पिता और संतानों के बीच संवाद का अभाव तथा जीवन-मूल्यों में अंतर संबंधों को कमजोर करता है। लेखिका यह संकेत करती हैं कि आधुनिकता और उपभोक्तावाद ने व्यक्ति को बाहरी रूप से समृद्ध अवश्य बनाया है, किंतु भावनात्मक रूप से अधिक अकेला और असुरक्षित भी कर दिया है (गुप्ता, 2017)। इस प्रकार *दौड़* आधुनिक परिवार के संकट और संबंधों में उत्पन्न विघटन का महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है।

4.4 *एक पत्नी के नोट्स* में स्त्री और परिवार

एक पत्नी के नोट्स ममता कालिया की चर्चित कृति है, जिसमें स्त्री जीवन, दांपत्य संबंध और पारिवारिक संरचना का अत्यंत संवेदनशील चित्रण मिलता है। यह उपन्यास एक शिक्षित और जागरूक स्त्री की दृष्टि से परिवार और विवाह संस्था का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। इसमें स्त्री के अंतर्द्वंद्व, उसकी आकांक्षाओं, असंतोषों और संघर्षों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। उपन्यास की नायिका परिवार को महत्व देती है, किंतु वह अपनी

स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान से समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। पति-पत्नी संबंधों में असमानता, स्त्री से जुड़ी पारंपरिक अपेक्षाएँ और पितृसत्तात्मक मानसिकता उसके जीवन में तनाव उत्पन्न करती हैं। इसके बावजूद वह संबंधों को तोड़ने के बजाय उन्हें अधिक न्यायपूर्ण और समानतामूलक बनाने का प्रयास करती है। ममता कालिया यहाँ स्त्री को विद्रोही के रूप में नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी चेतना के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास पारिवारिक संबंधों के पुनर्निर्माण की संभावनाओं को भी रेखांकित करता है (कालिया, 2002)।

4.5 चयनित कहानियों में संबंधों का विघटन एवं पुनर्निर्माण

ममता कालिया की कहानियाँ उनके उपन्यासों की तरह ही पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को केंद्र में रखती हैं। *सीट नं. छह, छुटकारा, प्रतिदिन, जाँच अभी जारी है* तथा अन्य कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ, पारिवारिक तनाव, स्त्री की बदलती भूमिका और मानवीय संबंधों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। इन कहानियों में संबंधों का विघटन प्रायः संवादहीनता, आर्थिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों के कारण होता है। हालाँकि ममता कालिया केवल संबंधों के टूटने की कथा नहीं लिखतीं। उनकी कहानियों में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जहाँ पात्र आत्ममंथन, संवाद और पारस्परिक समझ के माध्यम से संबंधों को नए आधार पर पुनर्स्थापित करने का प्रयास करते हैं। यही विशेषता उनके कथा साहित्य को निराशावादी होने से बचाती है। वे संबंधों की समस्याओं को स्वीकार करती हैं, किंतु उनके समाधान की संभावनाओं को भी खोजती हैं। उनके पात्र बदलती सामाजिक परिस्थितियों के बीच संबंधों को नए अर्थ देने का प्रयास करते हैं, जिससे पारिवारिक जीवन अधिक लोकतांत्रिक, समानतामूलक और मानवीय बन सके। समग्रतः ममता कालिया की चयनित कृतियाँ यह सिद्ध करती हैं कि पारिवारिक संबंधों का विघटन केवल व्यक्तिगत असफलता का परिणाम नहीं है, बल्कि व्यापक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से जुड़ी प्रक्रिया है। साथ ही, उनकी रचनाएँ यह भी दर्शाती हैं कि संबंधों की पुनर्संरचना संवाद, समानता, संवेदनशीलता और पारस्परिक सम्मान के आधार पर संभव है। यही दृष्टि उनके कथा साहित्य को समकालीन पारिवारिक विमर्श में विशिष्ट और प्रासंगिक बनाती है।

5. स्त्री विमर्श और पारिवारिक पुनर्संरचना

ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श केवल स्त्री-अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बदलते सामाजिक संबंधों, पारिवारिक संरचनाओं और मानवीय मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन से भी जुड़ा हुआ है। उनकी रचनाओं में स्त्री चेतना का विकास आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री की बदलती स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। शिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर स्त्री अब स्वयं को केवल परिवार की पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रखती, बल्कि अपने व्यक्तित्व, आकांक्षाओं और अधिकारों के प्रति भी सजग दिखाई देती है। ममता कालिया की स्त्री पात्र जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान निर्मित करने का प्रयास करती हैं। यह चेतना उनके भीतर आत्मसम्मान, निर्णय-क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करती है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री चेतना का उदय केवल व्यक्तिगत परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन का संकेत है, जिसने परिवार और समाज दोनों की संरचना को प्रभावित किया है (Beauvoir, 1949/2011; शर्मा, 2018)।

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी अस्मिता और पारिवारिक संबंधों का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाओं की स्त्रियाँ परिवार को अस्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर सम्मानजनक और समानतामूलक स्थान की आकांक्षा रखती हैं। वे अपने अस्तित्व को केवल पत्नी, माँ या पुत्री जैसी भूमिकाओं तक सीमित नहीं देखना चाहतीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में मान्यता प्राप्त करना चाहती हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में स्त्री और परिवार के बीच संबंध संघर्ष और संवाद दोनों के रूप में दिखाई देते हैं। *एक पत्नी के नोट्स* तथा अन्य कृतियों में स्त्री पात्र पारिवारिक संबंधों को बनाए रखते हुए अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रयासरत दिखाई देती हैं। इस प्रकार ममता कालिया यह प्रतिपादित करती हैं कि स्वस्थ पारिवारिक संबंध तभी संभव हैं जब उनमें प्रत्येक सदस्य की गरिमा और स्वतंत्रता का सम्मान किया जाए (गुप्ता, 2017)।

ममता कालिया का साहित्य पितृसत्तात्मक संरचना की सूक्ष्म किंतु प्रभावशाली समीक्षा भी प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज में लंबे समय तक परिवार की संरचना पुरुष-केंद्रित रही है, जहाँ निर्णय लेने की शक्ति, सामाजिक अधिकार और संसाधनों पर नियंत्रण मुख्यतः पुरुषों के हाथों में केंद्रित रहा। इस व्यवस्था में स्त्री से त्याग, समर्पण और आज्ञाकारिता की अपेक्षा की जाती रही है। ममता कालिया अपनी रचनाओं में इस असमान संरचना से उत्पन्न समस्याओं को उजागर करती हैं। वे दिखाती हैं कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था केवल स्त्री को ही सीमित नहीं करती, बल्कि पुरुष और स्त्री दोनों के मानवीय संबंधों को प्रभावित करती है। जब संबंध समानता और संवाद के बजाय अधिकार और नियंत्रण पर आधारित होते हैं, तब परिवार के भीतर तनाव, असंतोष और विघटन की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। उनकी रचनाओं में पितृसत्ता की आलोचना किसी वैचारिक घोषणापत्र के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के माध्यम से सामने आती है, जिससे उसका प्रभाव अधिक व्यापक और विश्वसनीय बन जाता है (Walby, 1990)।

स्त्री स्वायत्तता ममता कालिया के कथा साहित्य का एक केंद्रीय तत्व है। उनकी स्त्री पात्र आर्थिक, बौद्धिक और भावनात्मक स्तर पर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती हैं। यह स्वायत्तता पारंपरिक पारिवारिक संरचना के लिए चुनौती भी प्रस्तुत करती है और उसके पुनर्गठन की आवश्यकता भी उत्पन्न करती है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री की स्वतंत्रता परिवार-विरोधी नहीं है, बल्कि परिवार को अधिक लोकतांत्रिक और मानवीय बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। जब स्त्री को निर्णय लेने, अपनी आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने और समान अवसर प्राप्त करने का अधिकार मिलता है, तब पारिवारिक संबंध अधिक संतुलित और सम्मानजनक बनते हैं। इस प्रकार ममता कालिया के साहित्य में स्त्री स्वायत्तता परिवार के विघटन का कारण नहीं, बल्कि उसके पुनर्संरचनात्मक विकास का आधार बनकर उभरती है (Giddens, 1992)।

ममता कालिया की रचनाओं में नए पारिवारिक प्रतिमानों की अवधारणा भी महत्वपूर्ण है। वे ऐसे परिवार की कल्पना करती हैं जो पारंपरिक अधिकारवादी संरचना के बजाय संवाद, समानता, सहयोग और पारस्परिक सम्मान पर आधारित हो। उनके साहित्य में परिवार एक स्थिर और अपरिवर्तनीय संस्था नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तनों के साथ विकसित होने वाली संरचना है। बदलते समय में स्त्री और पुरुष दोनों की भूमिकाएँ पुनर्परिभाषित हो रही हैं तथा पारिवारिक संबंध नए मूल्यों के आधार पर निर्मित हो रहे हैं। लेखिका के अनुसार संबंधों की स्थिरता का आधार अब केवल सामाजिक परंपराएँ नहीं, बल्कि भावनात्मक निकटता, पारस्परिक विश्वास और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान है। यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में पारिवारिक पुनर्संरचना की प्रक्रिया संबंधों को अधिक मानवीय, समतामूलक और संवेदनशील बनाने की दिशा में अग्रसर दिखाई देती है।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक संबंधों के विघटन और पुनर्संरचना की प्रक्रिया का विश्लेषण करना था। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ममता कालिया ने समकालीन भारतीय समाज, विशेष रूप से मध्यवर्गीय परिवारों में घटित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित किया है। उनके कथा साहित्य में परिवार एक स्थिर और अपरिवर्तनीय संस्था के रूप में नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक संरचना के रूप में उपस्थित होता है, जो समय, परिस्थितियों और मानवीय आकांक्षाओं के प्रभाव से लगातार रूपांतरित होती रहती है। उनकी रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि आधुनिक जीवन में पारिवारिक संबंध अनेक चुनौतियों और अंतर्विरोधों से घिरे हुए हैं, किंतु इन चुनौतियों के भीतर संबंधों के पुनर्निर्माण और पुनर्संरचना की संभावनाएँ भी विद्यमान हैं।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि ममता कालिया के कथा साहित्य का केंद्रीय सरोकार मानवीय संबंधों की जटिलता और बदलती सामाजिक परिस्थितियों में उनकी प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है। *बेघर, नरक दर नरक, दौड़* तथा *एक पत्नी के नोट्स* जैसे उपन्यासों और उनकी अनेक कहानियों में पारिवारिक संबंधों की आंतरिक संरचना का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। लेखिका ने परिवार के भीतर उपस्थित भावनात्मक तनाव, दांपत्य संघर्ष, पीढ़ीगत असहमति, आर्थिक दबाव तथा स्त्री-अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके पात्र सामान्य मध्यवर्गीय जीवन के प्रतिनिधि हैं, जिनके माध्यम से समकालीन भारतीय समाज की वास्तविकताओं को समझा जा सकता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक विघटन के पीछे अनेक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण कार्यरत हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद तथा व्यक्तिवादी जीवन-दृष्टि ने पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों को प्रभावित किया है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता और प्रतिस्पर्धा के कारण परिवार के सदस्यों के बीच संवाद और भावनात्मक निकटता में कमी आई है। आर्थिक दबावों ने भी संबंधों में तनाव उत्पन्न किया है। इसके अतिरिक्त स्त्री की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मचेतना ने पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचना को चुनौती दी है, जिसके कारण परिवार के भीतर भूमिकाओं और संबंधों का पुनर्गठन आवश्यक हो गया है। ममता कालिया इन परिवर्तनों को नकारात्मक दृष्टि से नहीं देखतीं, बल्कि उन्हें सामाजिक विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

पारिवारिक संबंधों की पुनर्संरचना के संदर्भ में ममता कालिया का दृष्टिकोण अत्यंत सकारात्मक और मानवीय है। उनकी रचनाओं में संबंधों का समाधान पारंपरिक मूल्यों की पुनर्स्थापना में नहीं, बल्कि नए सामाजिक मूल्यों के निर्माण में निहित है। वे ऐसे परिवार की कल्पना करती हैं जो समानता, संवाद, पारस्परिक सम्मान और भावनात्मक सहयोग पर आधारित हो। उनके साहित्य में स्त्री और पुरुष के संबंध अधिकार और अधीनता के बजाय सहभागिता और साझेदारी पर आधारित दिखाई देते हैं। लेखिका का मानना है कि आधुनिक परिवार की सफलता उसके सदस्यों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करने में निहित है। इस प्रकार उनके कथा साहित्य में पुनर्संरचना की प्रक्रिया आधुनिक सामाजिक यथार्थ के अनुरूप नए पारिवारिक प्रतिमानों की स्थापना की ओर संकेत करती है।

ममता कालिया की साहित्यिक उपलब्धि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनकी यथार्थवादी दृष्टि और सामाजिक संवेदनशीलता है। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री-अनुभव, पारिवारिक संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन के नए आयाम प्रदान किए हैं। उनकी रचनाएँ स्त्री-विमर्श को केवल वैचारिक स्तर पर नहीं, बल्कि जीवन के व्यावहारिक संदर्भों से जोड़ती हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री की स्वतंत्रता और पारिवारिक संबंध परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि दोनों के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है। उनकी भाषा की सहजता, व्यंग्यात्मक शैली, मनोवैज्ञानिक गहराई तथा सामाजिक यथार्थ के प्रति प्रतिबद्धता उन्हें समकालीन हिंदी कथा साहित्य की अग्रणी रचनाकारों में स्थापित करती है।

संदर्भ सूची

कालिया, ममता. (1971/2010). *बेघर.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

कालिया, ममता. (1975). *नरक दर नरक.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

कालिया, ममता. (2000). *दौड़.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

कालिया, ममता. (2002). *एक पत्नी के नोट्स.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

कालिया, ममता. (2005). *ममता कालिया की कहानियाँ* (खंड 1–2). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

कालिया, ममता. (2025). *दूरस्थ दाम्पत्य.* नई दिल्ली: सेतु प्रकाशन।

कालिया, ममता. (2025). *शेषकथा.* नई दिल्ली: सेतु प्रकाशन।

शर्मा, सुधा. (2018). *ममता कालिया का कथा साहित्य: एक अध्ययन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

नाइक, आर. एम. (2018). *ममता कालिया का कथा साहित्य: परिवेशगत यथार्थ* (अप्रकाशित शोध-प्रबंध). गोवा विश्वविद्यालय, गोवा।

सिंह, अनीता. (2019). *ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना.* शोध आलेख।

इंदिरा, वी. (2025). ममता कालिया के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री-पुरुष संबंध. *अक्षरसूर्य,* 5(6), 77–82.

बच्छाव, दिलीप दौलत. (2021). 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में नारी विमर्श. *साहित्य संहिता,* 7(1).

सागी, पीटर. (2018). *स्त्री एवं सामाजिक प्रसंग: ममता कालिया का कथा साहित्य.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

यादव, राजेंद्र. (2008). *स्त्री विमर्श और हिंदी कथा साहित्य.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

भंडारी, मन्नू. (2007). *एक कहानी यह भी.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।

चौधरी, मैत्रेयी. (2004). *भारतीय नारी: अस्मिता और संघर्ष.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

खेतान, प्रभा. (2003). *स्त्री उपेक्षिता.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

सिंह, कुसुम. (2014). *हिंदी महिला उपन्यासकारों का स्त्री-विमर्श.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

सिंह, नामवर. (2016). *कहानी: नई कहानी.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

वाजपेयी, अशोक. (2012). *हिंदी साहित्य: बीसवीं सदी.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

गुप्ता, रमेश. (2017). *समकालीन हिंदी कथा साहित्य और स्त्री लेखन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

वर्मा, उषा. (2019). *समकालीन हिंदी महिला कथाकारों का साहित्य.* इलाहाबाद: साहित्य भवन।

पांडेय, मैनेजर. (2005). *साहित्य और इतिहास दृष्टि.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

आहूजा, राम. (2016). *भारतीय सामाजिक व्यवस्था.* जयपुर: रावत प्रकाशन।

देसाई, आई. पी. (2008). *भारत में परिवार और समाज* (हिंदी अनुवाद संस्करण). नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।

शाह, ए. एम. (2009). *भारतीय परिवार: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

दुबे, श्यामाचरण. (2001). *भारतीय समाज.* नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

सिंह, योगेन्द्र. (2011). *भारतीय परंपरा और आधुनिकीकरण.* नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।

गिडेन्स, एंथनी. (1992). *आत्मीय संबंधों का रूपांतरण* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।

बोउवार, सिमोन द. (2011). *द सेकंड सेक्स* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

वाल्बी, सिल्विया. (1990). *पितृसत्ता का सिद्धांत.* ऑक्सफोर्ड: बेसिल ब्लैकवेल।

बाउमन, जिग्मुंट. (2003). *लिक्विड लव: आधुनिक संबंधों की नाजुकता.* कैम्ब्रिज: पॉलिटी प्रेस।

Cite this Article:

प्रीतिका,“ ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक संबंधों का विघटन और पुनर्संरचना: एक अध्ययन” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.79–88, Volume-05, Issue-02, July-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रीतिका

For publication of Research Paper title

ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक संबंधों का विघटन और पुनर्संरचना: एक अध्ययन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.09